मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 92,सितम्बर(प्रथम), 2020

"शिक्षकों के सम्मान और आभार का पर्याय है शिक्षक दिवस"

राम निवास मीना

देश का हर एक विद्यार्थी आज के दिन की प्रासंगिकता को भलीभांति जानता है कि 5 सितंबर को ही शिक्षक दिवस क्यों मनाया जाता है? 5 सितंबर हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है जिन्होंने पूरे भारत में शिक्षकों के सम्मान के लिए शिक्षक दिवस के रूप में उनके जन्मदिन को मनाने का आग्रह किया था क्योंकि वे स्वयं भी एक आदर्श शिक्षक, दार्शनिक व शिक्षाविद थे। इसलिए समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को इस दिवस पर पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

गुरु शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है। जीवन में माता-पिता का स्थान तो कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं और पाल पोसकर गुरु के नजदीक जाने तक हमारा पूरा ध्यान रखते हैं। इसलिए कहा जाता है कि जीवन के सबसे पहले गुरु हमारे माता-पिता होते हैं और दूसरा गुरु शिक्षक।भारत में प्राचीन समय से ही गुरु-शिष्य परंपरा चली आ रही है वेदों और उपनिषदों में भी गुरु शिष्य परंपरा के महात्म्य को बखूबी वर्णित किया गया है। उपनिषदों से चयनित कुछ शब्द देश के सभी केंद्रीय विद्यालयों में और अन्य संस्थाओं में प्रतिदिन उच्चारित किए जाते रहे हैं। यथा- "ॐ सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।। ॐ शांति: शांति: शांति:।"

अर्थात हम सभी (गुरु-शिष्य) एक-दूसरे की रक्षा करें। हम साथ-साथ भोजन करें। हम साथ-साथ काम करें। हम साथ-साथ उज्जवल और सफल भविष्य के लिए अध्ययन करें। हम कभी भी एक-दूसरे से द्वेष न करें।

इन सब प्रसंगों से हम महसूस कर सकते हैं कि शिक्षक (गुरु) ही वह पथ प्रदर्शक है जो छात्र को हर मोड़ पर आने वाली समस्याओं को पार करना सिखाता है। जीवन रूपी अथाह सागर में डुबकी लगाना सिखाता है और उसमें वे सब तैराकी के कौशल विकसित करता है, जिससे वह (शिष्य) चंचल लहरों को भी आसानी से तैरकर पार करता हुआ अपनी मंजिल (लक्ष्य) को हासिल कर सके। गुरु ही है जो जीने का असली तरीका प्रत्येक छात्र को सिखाता है। इतना ही नहीं बल्कि परमात्मा के साक्षात्कार का माध्यम भी गुरु ही माना जाता है। तभी तो कहा गया है-

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय ।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।"

भारतीय संस्कृति में गुरु के लिए आदर-सम्मान देवता तुल्य स्तुति से कम नहीं है। गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूजनीय हैं। यथा-

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।"

जब पूरा देश आज के दिन सभी शिक्षकों को पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा के साथ नमन करता है। उनके गुणों का बखान करता है तो स्वभाविक तौर पर वर्तमान महामारी (कोविड-19) के दौर में गुरु का दायरा और भी विस्तीर्ण हो जाता है। वर्तमान दौर में शिक्षक द्वारा गूगल मीट पर शिक्षण कालांशों में कक्षा-कक्ष के माहौल को साकार करने का हर पल प्रयास किया जा रहा है। शिक्षक उस कुंभकार से भी बढ़कर है जिसका रो मटेरियल (कच्ची सामग्री) सामने न होने पर भी देश सेवा के भांडे (भविष्य निर्माण) गढ़ने के काम में अनवरत लगा हुआ है। टेक्नोलॉजी रूपी चाक से उसे निरंतर नया रूप देने और मजबूत बनाने के लिए हमेशा प्रयासरत है ताकि उसमें कोई खोट न रह जाए। मैं एक शिक्षक होने के नाते कहना चाहूंगा कि- १. बच्चों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखते हुए उनकी भावनाओं को समझना और उनके लिए उत्प्रेरक व उद्दीपक की भांति कार्य करना श्रेष्ठ शिक्षक की पहचान है। असली शिक्षक वह है जो बने बनाए नियमों में न बंधकर स्वयं के आदर्श नियम तय करता है तथा छात्रों की सभी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर रहता है। २. असली शिक्षक चुनौतियों को स्वीकार करता है, मंद ग्राही छात्रों को मुख्यधारा में लाने के लिए हर संभव प्रयासरत रहता है तथा उन्हें उच्चलब्धि छात्रों के समक्ष खड़ा करने में कामयाब होता है। ३. असली शिक्षक छात्रों की पृष्ठभूमि को पहचान पाता है, कक्षा के अन्य छात्रों से उनके सामाजिक व आर्थिक गैप को पाटने में हर संभव मदद करता है। ४. असली शिक्षक समूह शिक्षा के माध्यम से अध्यापन सामग्री को प्रत्येक विद्यार्थी तक पहुंचाकर हृदयंगम करवाता है तथा उनकी नादानियों अर्थात छोटी-छोटी गलतियों पर क्षमादान देता है। ५. असली शिक्षक वह होता है जो छात्रों को सिद्धांतों अर्थात नियम कानूनों में न उलझाकर व्यावहारिक तरीके से, अंतर अनुशासनात्मक एप्रोच से अधिगम करवाता हुआ उनमें प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास कर पाता है। ५. असली शिक्षक छात्रों को अंक प्राप्ति के घेरे से निकालकर ज्ञान प्राप्ति की तरफ धकेलना चाहता है। पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त उन्हें समाज सेवा की सामाजिक गतिविधियों को संपन्न करने के लिए सन्नद्ध करता है। इस प्रकार की गतिविधियों का कोरोना काल में विशेष महत्व है। ६. असली शिक्षक शिक्षण-काल के दौरान विद्यार्थी को जादूगर की भांति विराट स्वरूप के दर्शन हेतु उत्प्रेरित करता है तथा मूर्त संसार में उसकी भूमिका का परिचय करवाता रहता है। क्योंकि प्रत्येक छात्र देश का भविष्य है और देश निर्माण में उसका अहम योगदान है।

इसलिए मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहना चाहता हूं कि 5 सितंबर 2020 शिक्षक दिवस के अलावा एक 'रक्षक दिवस' भी है क्योंकि कोरोना काल में गुरु-शिष्य की निकटता आंतरिक भावनाओं से हैं, कक्षा-कक्ष से नहीं।हमें एक दूसरे की सुरक्षा

का मंत्र पाठ करना होगा और पढ़ाई के साथ-साथ कोरोना को भगाने के लिए आवश्यक सावधानियों को बरतना होगा। इसलिए शिक्षक के सम्मान और आभार का दायित्व मात्र छात्रों पर ही नहीं स्वयं शिक्षक पर भी है। क्योंकि उसने (गुरु ने) अज्ञान रूपी अंधकार से अंधे हुए जीव (शिष्य) की आंखें, ज्ञान रूपी काजल की शलाका से खोली है, ऐसे श्री सद्गुरु को प्रणाम हैं। और शिक्षकों के सम्मान से ही भारत देश भी महान है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें